

जनसत्ता रविवारी

◆ २४ फरवरी २००२ ◆

अस्सी के रज़ा

बिंदु का नाद

आधुनिक भारतीय कला के पेरिस-बसे मूर्धन्य कलाकार सैयद हैदर रज़ा ने २२ फरवरी को उम्र के अस्सी बरस पूरे किए हैं। इस मौके पर देश में खास आयोजन हो रहे हैं। मुंबई और दिल्ली की कलावीथियों में उनके नए और पुराने चित्रों की प्रदर्शनियां आयोजित हैं। पद्म विभूषण दिए जाने की बात भले हमारी कला-विरोधी नीति की भेंट चढ़ गई; फ्रांस की सरकार उन्हें अपने विशिष्ट सम्मान से नवाज रही है। इसी सप्ताह दिल्ली और मुंबई में कवि-कलाप्रेमी अशोक वाजपेयी की लिखी-संपादित पुस्तक 'रज़ा' का लोकार्पण अपने में एक घटना होगा। उसी पुस्तक में शामिल रज़ा से पेरिस में हुई हफ्तों लंबी बातचीत के प्रमुख अंश हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। साथ में रज़ा की अपनी नोटबुक से कुछ इंद्राज।

मैं उस काम के बारे में जानना चाहता हूँ जिसे आप अपना अंतिम चरण कहते हैं। अगर आप भारत में होते तो किस प्रकार का काम कर रहे होते? आपका इधर का काम इतना भारतीय लगता है मानो वह पेरिस के अस्तित्व के प्रति उदासीन हो। क्या यह कहना सही है?

नहीं। कला की बुनियादी समस्याओं और विशेषतः अपने काम से संदर्भ में मेरे जो समझ बनी हैं उसमें पेरिस की बड़ी भूमिका है। फ्रांस में मेरे प्रवास ने मुझे बहुत कुछ दिया है और अगर मैं अमेरिका या लंदन में रहा होता तो कहानी दूसरी होती। मुझे पेरिस में रहना था, यह काफी सांच-विचार कर तय हुआ था। यहां बहुत ऊँचे टाँके के उदाहरण थे जिन्होंने यह महत्वाकांक्षी दो

बारे कुछ भी परिष्कृत या जटिल नहीं है। लेकिन सतह पर नहीं, गहराई में। अपनी नोटबुक के संदर्भ में आप कह रहे थे कि आपका प्राचीन भारतीय परंपरा से आई अवधारणाओं और विचारों से प्रेरणा मिलती है जिन्हें आप अपने काम में आत्मसात करने या जिनका पुनराविष्कार करने की कोशिश करते रहे हैं। अब आप एक आदर्श हैं, भारतीय कला में आधुनिक आंदोलन के अग्रदूत रहे हैं और यहां आप परंपरा की ओर लौट रहे हैं। आपको इसमें कोई अंतर्विरोध दीखता है?

बिल्कुल नहीं। मेरी नोटबुक में पहला शब्द है 'समाधान' जो भाव में सदियों पार से चला आ रहा है। 'समाधान' सदियों पुराना है लेकिन इतना आधुनिक, इतना आज का विचार है।

गोपाल दूसरे न कोई' सभी पर लागू होता है। यह स्वयं को केवल एक-दूसरे पर नहीं बल मानव जाति पर अभिव्यक्त करता है। मेक्सिको, उत्तरी अमेरिका और इंग्लैंड में मीराबाई के भक्त ठीक उसी प्रकार हो सकते हैं, जिस प्रकार भारत में क्योंकि किसी चीज के प्रति ऐसी भक्ति और एकनिष्ठ भाव महानतम जातियों का लक्षण है। दूसरा उदाहरण है ईसा मसीह जो संपूर्ण विश्व में किसी भी मनुष्य, धार्मिक अथवा असाही व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आप की नोटबुक में ज्यादातर सामग्री काव्य, दर्शन, धार्मिक व आध्यात्मिक ग्रंथों से संकलित की गई है। इन पुस्तकों में यदा-कदा चित्रकारों एवं कला-समीक्षकों की टिप्पणियां भी मिलती हैं। इससे ऐसा लगेगा कि कम से कम आपके विचारों अथवा चिंतन की चित्रकारों अथवा कला की दुनिया से उतनी अधिक प्रेरणा नहीं मिलती, जितनी कि साहित्य, काव्य की दुनिया और दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक विचारों से।

बहुत ही कम बातें हैं जिन्हें मैंने स्वयं अपने शब्दों में लिखा है। जैसे 'चित्र बनाए नहीं जाते बल्कि बने जाते हैं।' मुझे सबसे अधिक प्रेरणा कविता से मिली है। भारतीय कविता के अंगरत हिंदी तथा उर्दू में तथा फ्रेंच कविता में ऐसी अद्भुत बातें कही गई हैं, जो हृदय की गहराइयों से दृढ़ विश्वास के साथ जन्म लेती हैं तथा जिन्हें केवल शब्दों के माध्यम से ही व्यक्त किया जा सकता है। चित्रकार के लिए वे बातें कहना बहुत कठिन है; जैसे कि उस्ताद, जिन्होंने कहा है- 'देखो अपने कानों से, सुनो अपनी आंखों से।' आज यह बहुत ही सुंदर और अद्भुत मत बन गया है। समय-समय पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आंखें बंद करके सुनने और समझने का प्रयास करना चाहिए। मैं अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध और मीर को पढ़कर अभिभूत हो जाता हूँ। 'तम सत्य में तैल्लि है जगत्-समीक्षा' - जैसी पंक्तियां! जब सुंदर बातों को रोचक ढंग से कहा जाता है तो मुझे अधिक आकर्षित करती हैं।

भारत में रहते हुए आपने एक बार कहा था कि अब मैं जहां तक हो सके, सफेद रंग का प्रयोग करना चाहता हूँ। आपने सोना पुरेया के साथ मुंबई में एक प्रदर्शनी भी की थी लेकिन आजकल स्टूडियो में जो काम आप कर रहे हैं वह रंगों से सराबोर है। सफेद रंग की ओर वापसी यहां नहीं दीखती।



अपनी बिंदु शृंखला की एक कृति के साथ सैयद हैदर रज़ा

मुझे काम करने में कठिनाई होगी। जीवन विभिन्न स्थितियों और परिस्थितियों से बना है। जब मेरी पत्नी अस्पताल जा रही होती है तो मैं अध्यात्म की ओर उन्मुख नहीं हो पाता। मेरे कार्य का यह भाग सबसे अधिक गंभीर है। मैं प्रार्थना और आशा करता हूँ कि मैं अपने इस कार्य का निर्वहण पूरे तह से कर सकूँ; यह अभी-अभी शुरू हुआ है परंतु इसके लिए बहुत अधिक मानसिक शांति

जिंदगी से प्यार करता है, मैं खूबसूरत चीजों से प्यार करता हूँ और रंगों से प्यार करता हूँ। मैं बार-बार रंगों की ओर लौट रहा हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि आप उन चित्रकारों में से एक हैं जिनका अगला चित्र आज के चित्र से जन्म लेता है। चित्रों का आपसी संबंध ऐसा मजबूत और सुगठित है मानो जब आप एक चित्र बना रहे हैं ठीक

के पांच बिंदुओं में उपस्थित था। पहला दूसरे का विकिरण है। इन सबके परिणामस्वरूप एक बड़ा चित्र प्राप्त होगा जो उन तत्वों का संयोजन होगा जिनका मैंने छोटे चित्रों में प्रयोग किया है और जो मेरे लिए प्रारंभिक रूप अथवा रेखा-कृतियां हैं। अंततः वह अपेक्षाकृत अधिक जटिल विस्तृत जीवन के अस्तित्व के प्रति मेरा प्रेम है। मूलभूत मानवीय भाव (संवेग) जिन्हें हम सस कहते हैं, आजा भी संगीत में विद्यमान हैं। साथ ही चित्र बार जब वह विकसित हो जाते हैं तो आप देखते हैं कि उन पर केवल पसियां ही नहीं बल्कि फल और फूल भी आते हैं। चित्र भी इसी तरह सुगठित हैं।

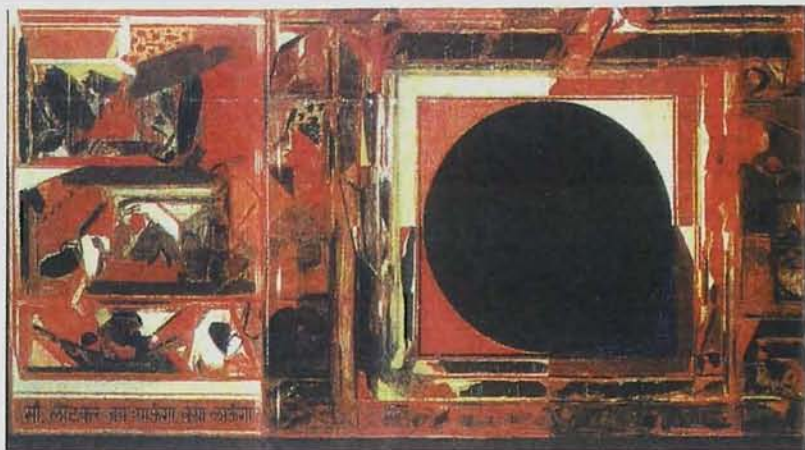
पर वियोग है, दुख का भाव भी है। यह चित्र सुख और दुख दोनों ही भावों की रंगों के माध्यम से प्रदर्शित करता है। आकस्मिक मिलन में सुख है। वियोग में दुख है। आप कैवलस पर प्रेमो एवं प्रेमिका की शारीरिक रूप से नहीं देखते। मुझे लगता है कि यह शापद कविता और मानव जीवन के अस्तित्व के प्रति मेरा प्रेम है। मूलभूत मानवीय भाव (संवेग) जिन्हें हम सस कहते हैं, आज भी संगीत में विद्यमान हैं। साथ ही चित्र कला में भी वे विद्यमान हो सकते हैं। उदाहरण के लिए-मुझे लगता है कि शृंगार पर चित्र बनाना आसान है। राजस्थान पर चित्र बनाना संभव है, आत्मा के सबसे विकसित रूप को चित्रित करना भी संभव है। मैं ज्यादा व्याख्या नहीं करना चाहता। मैं फोटोग्राफ नहीं हूँ, मैं पत्रिका का रिपोर्टर भी नहीं हूँ। मैं धली की सबसे खूबसूरत स्त्री का चित्र बना रहा हूँ। मैं नारी के

आप अपने चित्र में वास्तविक शब्दों का, इबारत का प्रयोग करते हैं। आप के पास एक

भर प्रवास में मुझ बहुत कुछ दिया है आर अगर मैं अमेरिका या लंदन में रहा होता तो कहानी दूसरी होती। मुझे पेरिस में रहना था, यह काफी सोच-विचार कर तय हुआ था। यहां बहुत ऊंचे दर्जे के उदाहरण थे जिन्होंने यह महत्वाकांक्षा दी कि हम ऐसे प्रतिभां पर पहुंच सकते हैं जो दुनिया में कहीं भी सबसे ऊंचे हों। पर यह सिर्फ सोचने भर से नहीं हो सकता, आपको क्षमता के एक स्तर पर पहुंचना होगा। फ्रांस में मेरे खने ने मेरी मदद की, न सिर्फ यह देखने में कि निकोला द स्टाल, मोन्टियान या सूलाज के चित्रों में क्या श्रेष्ठ बाल्टिक अपनी संभावनाएं विकसित करने, अपने तकनीकी कौशल का विकास करने और उस भाषा पर अधिकार करने में थी, जो मेरी चित्र-भाषा है। मैं अपना बचपन और जवानी नहीं भूलता और ही उन सबकों को जो मैंने यहां पाए- रा, रेखा, आकृति, स्पेस आदि की प्राथमिक समस्याओं को लेकर फ्रांस एक ऐसा देश है जिसमें अनुप्रात का बोध असाधारण है; इमारतों में, कला में, साहित्य में और जिंदगी में। वह कला और चित्रकला में बहुत महत्वपूर्ण है। अगर मैं इस सुयोग्य तक नहीं आता तो मैंने 'तमसाम्ना' या 'बिंदुनाद' जैसे चित्र न बनाए होते: विकीर्ण होते काले रंग में। मुझे काले के महत्व का अहसास हुआ। मैं उसे भारतीय चित्रन से जोड़ता हूं। मुझे लगता है कि काला रंग मातृभूरा है, वह रंगों की जन्मनी है। वह विचित्र है और यह संभव है, मैं यहां विष बनाऊं या भाला में। इस बोध का उम फ्रांस में है जिसे मैं नहीं भूलता। अब अपने पूछा कि मैं अगर भारत में होता तो क्या यही काम कर रहा होता। सोधा जवाब यह है कि हां, मैं यही कर रहा होता। लेकिन मैंने सारा और अमरको के दशकों में जो स्वागत किया था वह उस काम में प्रशेपित हो रहा है जो मैं अब कर रहा हूं। मैं किसी भी कीमत पर भारतीय होने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। ऐसा नहीं है कि मैं पाट्टी पहन लूं या कि कुर्ता-पायजामा तो मैं भारतीय हो जाऊंगा। ऐसा भी नहीं कि मैं भारत के कुछ प्रतीकों और चिह्नों आदि का उपयोग करता हूं तो मैं भारतीय कलाकार हो गया। न, ऐसा नहीं है। वह उसके मूलतत्त्व में है। अगर कोई कृति कुछ प्रतीकों, चिह्नों का बाहरी प्रदर्शन भर हो तो उसमें मूलतत्त्व नहीं हो सकता। हर कोई एक बिंदु बना सकता है या त्रिभुज या वृत्त खींच सकता है। यह वही नहीं है। सवाल यह है कि नादबिंदु स्पेस में ऐसे विकीर्ण हो सकता है जैसे भारतीय गायन या याद संगीत होता है। आप किसी भारतीय मंदिर में जो ध्वनियां सुनते हैं क्या उसे किसी प्रोस्टेस्टे देवघर या चर्च में सुन सकते हैं? यह कान्वेट, जिसमें अब मैं रहता हूं, १६४०-५० में बना था। मेरे घर के अंदर इतने सारे भारतीय विचार, ध्वनियां, भावनाएं आदि रहते हैं कि इसका कोई महत्व नहीं रह जाता कि मैं फ्रांस में रहता और चित्र बनाता हूं या कि दिल्ली या मुंबई में। सवाल दखलसल यह है कि उन सारे विचारों को आत्मसात कर जो हमारी परंपरा में आते हैं और जिन्हें व्यक्त करने के लिए उन कला-मूल्यों की व्यावसायिक समझ और चाक्षुषता के अवबोध से मदद मिलती है, अपने कैमबस रंगों के संगीत से भर सकूं। मैं सोचता हूं कि मैं मंडला में ही हूं। मैं अमरकंटक या नोलकंड चित्रित कर रहा हूं जो इन सबको से आते हैं जिन्हें मैंने अपने बचपन से सोखा है और जिनके बारे में मेरी चेतना विकसित हुई है भले मैं उन सबसे भीतिक रूप से इतनी दूर रहा हूं। मूलतत्त्व तक जाना चाहता हूं और यह देखना भी कि जिन साधनों का उपयोग किया जाता है उन पर पूरा अधिकार है। सामन जो सरल है, लक्ष्य जो सरल है- उनके

का आतावारा संकेता है।

बिल्कुल नहीं। मेरी नोटबुक में पहला शब्द है 'समाधान' जो भारत में सदियों पार से चला आ रहा है। 'समाधान' सदियों पुराना है लेकिन इतना आधुनिक, इतना आज का विचार है। अगर मैं ठीक समझ पाया हूं तो समाधान का आशय है किसी एक चीज पर एकाग्रता, बिना किसी हिचक के एकाग्रता, मन के यहां-वहां भटकने से बचकर। यह किसी भी व्यक्ती के लिए इतना आधुनिक है। हम जिस समय को समझने की कोशिश कर रहे हैं उसे उद्घाटित करने के लिए खाने की मेज पर यों ही होने वाली गपशप में भी यह प्रासंगिक है। यह महत्वपूर्ण है जब मैं अपने पंचतत्व के सामने हूं और रा और अवकाश के बारे में निर्णय कर रहा होंकि कि उसे काला होना चाहिए या लाल, पीला या उजला। मैं नामों के बारे में सोचने में डूबा हूं जो इन पंचतत्त्वों को घेर रहे। पूरी तरह से वही मौजूद रहना निवार्य अनिवार्य है। यही समाधान है। मेरी नोटबुक के पहले पृष्ठ पर एक दूसरा शब्द है- उन्मिषत। मैंने इसे एक फ्रेंच अनुवाद से लिया है। कल्पना कीजिए। फ्रेंच अनुवाद में लिखा है कि इसके मायने हैं स्वामी/गुरु के सामने संपूर्ण एकाग्रता और आत्माकारिता के साथ बैठना। यह अद्भुत है। इस्लाम क्या है? इस्लाम ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है। ये सभी विचार सुसंगत हैं न कि असंगत, ये क्यों से इसी प्रकार से चले आ रहे हैं और मेरी समझ से अपरिवर्तनीय और अनश्वर हैं। हमें अपने देश की प्रचलित उक्तियों को आज महसूस करने की आवश्यकता है; क्योंकि वे सत्य पर आधारित हैं। 'सत्य' और 'अहिंसा' पहले भी महत्वपूर्ण थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे। मीरबाई का उदाहरण 'मेरे तो गिरध



चित्र में कविता : रजा की एक और कृति

इस विषय पर मेरे विचार बिल्कुल स्पष्ट है। संभवतः यह मेरी सीमा है और यही तथ्य है। मेरी विचार से यह बिल्कुल सच है कि जीवन में तुम्हें आध्यात्मिकता और सांसारिकता के बीच महसूस करने की आवश्यकता है; क्योंकि वे सत्य पर आधारित हैं। 'सत्य' और 'अहिंसा' पहले भी महत्वपूर्ण थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे। मीरबाई का उदाहरण 'मेरे तो गिरध

की आवश्यकता है। इसके लिए सांसारिक विषयों, समस्याओं और कठिनाइयों से मुक्ति की आवश्यकता है। मैं धीरे-धीरे अपनी शक्ति को फिर से जुटाने का प्रयास कर रहा हूं लेकिन साथ ही साथ मुझे बहुत से अवरोधों का भी सामना करना पड़ा रहा है। ये आने वाले बड़े चित्रों के लिए प्राथमिक नोट्स हैं। अगर मैं कहूं कि यह मेरी सीमा है तो ऐसा इसलिए है कि मैं

उसी समय रहस्यात्मक ढंग से अगले चित्र की भूमिका रच रहे हूं। बिल्कुल सच। यह बिल्कुल ठीक बात है। यह इन तीन-चार चित्रों से बिल्कुल स्पष्ट है जो इस समय स्टूडियो में रहे हैं। मैंने आपको एक पुराने चित्र का फोटो दिखाया था, जो कि आज चित्रों के लिए प्राथमिक नोट्स हैं। अगर मैं कहूं कि यह मेरी सीमा है तो ऐसा इसलिए है कि मैं

हैं।

आप अपने चित्र में वास्तविक शब्दों का, इबारत का प्रयोग करते हैं। आप के पास एक चित्र है जिसमें आपने एक कविता की पंक्ति अंकित कर दी है। अभी आपने 'सूर्य नमस्कार' नामक चित्र में 'हिंदी शब्द 'सूर्य नमस्कार' का प्रयोग एक भाग के रूप में किया है।

केवल यही नहीं, कभी-कभी मैं कुछ छंद भी अंकित कर देता हूं, जैसे- 'मेरा मुझमें कुछ नहीं' अथवा 'मां लौटकर जब आऊंगा क्या लाऊंगा?' या 'तुमसे मिलकर उदास रहता हूं।' यह रीति विशेष कभी-कभी दर्शकों को इस प्रकार से धमित कर सकती है कि वह चित्रों को समझने के बजाय उन्हें पढ़ने का प्रयास करने लगें। हर व्यक्ति उसे बार-बार पढ़ने की कोशिश करेगा। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो वह भाषा न जानता हो समझने में कठिनाई भी होगी।

मेरी समझ में जो शब्द में चित्रों में प्रयोग करता हूं अथवा उन पर लिखता हूं, उनकी रचना बहुत साधधानीपूर्वक की जाती है तथा उन्हें चित्रों में व्यवस्थित ढंग से समाहित किया जाता है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है लेकिन मूल रूप से यह पृथक विचार है। मैंने महसूस किया है कि लगातार संक्षिप्तकीकरण के क्षेत्र में कई सालों के प्रयोग के पश्चात मैंने जो चित्र बनाए थे रंगों में विषयवस्तु से परे अभिव्यक्तियां थीं। जब मैं अपने चित्र में फेज के शेर देवनागरी लिपि में अंकित करता हूं तो यह एक प्रेमी का अपनी प्यारी से मिलने का सुख है और क्योंकि यहां

आप के सबसे विकसित रूप को चित्रित करना भी संभव है। मैं ज्यादा व्याख्या नहीं करना चाहता। मैं फोटोग्राफ नहीं हूं, मैं पत्रिका का रिपोर्टर भी नहीं हूं। मैं धरती की सबसे खूबसूरत स्त्री का चित्र बना रहा हूं। मैं नारी के अस्तित्व को प्रतिबिंबित कर रहा हूं। हमारी स्त्रियां सांवली होने के बावजूद बहुत खूबसूरत हैं, अपनी सुंदर आंखों, सुंदर ललाट एवं नारीत्व के कारण। वह जानती हैं कि कितना बताया जाए और कितना छुपाया जाए। उनमें लज्जा जैसा विशेष गुण निहित है जो कि अत्यंत मूल्यवान है। जहां तक मेरा सवाल है मैं पेरिस में रहता हूं और जानता हूं कि यहां पर अखबार देह का ऐसा प्रदर्शन करते हैं कि आपमें इन अखबारों के प्रति ऊब पैदा हो जाती है। जीवन तथा चित्रांकित भावों की लय में अनिवार्य रूप से नारीत्व हो सकता है। मुझे लगता है कि राजस्थान को, बिना नाथद्वारा मंदिर अथवा रंग बिरंगी पोशाकों में सड़कों पर घूमते हुए स्त्री एवं पुरुषों तथा छत पर बैठे हुए मोर को चित्रित कर, प्रदर्शित किया जा सकता है। रेखाओं, रंग एवं अवकाश से इसका संकेत किया जा सकता है। आप देखाओं या ईश्वर के चित्र नहीं बनाते बल्कि आलोचक आलोचक और आनंद को चित्रित करते हैं: साधारण और ईश्वरीय। मैं चाहता हूं कि मैं सफेद रंग में कुछ चित्रित करूं, जिसमें हारे जैसी चमक, चंदमा की पवित्रता हो, जो कि प्रकृति में एक ऐसीक के जीवन के प्रति प्रेम को प्रतिर्शित करे, और इस सीमा तक चला जाए कि उसकी आंखों सबसे बड़ी अभिमाना अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक हो, जो कि मेरी दृष्टि में सबसे बड़ी मानवीय महत्वाकांक्षा हो सकती है।

एक प्रश्न आपके काम से जुड़ा है। अधिकतर रचनाकार, चाहे चित्रकला के या मूर्तिकला के, साहित्य या संगीत के क्षेत्र के, उस आलोचनात्मक प्रतिक्रिया से असंतुष्ट रहते हैं जो उन्हें मिलती है। इस बात से नाबुख कि उन्हें ठीक से समझा नहीं गया। अपने कार्य को लेकर आलोचकों की प्रतिक्रिया के प्रति आपका क्या रुख है?

ईगान्दारी से देखें तो आलोचना रचना के बाद आती है। इसका स्थान कलाकृति और कलाकार के पहले नहीं है। कलाकार के रूप में फ्रांस और भारत के अपने अनुभव में मुझे अच्छी और बुरी- दोनों तरह की समीक्षाएं मिली हैं। मैंने कभी कला समालोचकों के पीछे भागने की कोशिश नहीं की, उनसे मदद की अपेक्षा नहीं की। आलोचकों से प्रायः मेरे अच्छे संबंध रहे, उनमें से कुछ मेरे बहुत गहरे मित्र हैं और यदा-कदा फ्रांस और भारत में मेरी प्रतिकूल आलोचना भी का गई है जो स्वाभाविक है। रहन मारिया रिले के का कहना था- 'कला आलोचना से बुरी और कोई चीज नहीं।' मैं खतरी दूर तो नहीं जाऊंगा। मेरी समझ में मोडिया या आलोचक कला-परिदृश्य को समझते, उसे उपभोग के लिहाज से जवाबदेह हैं और वे अच्छे, बुरे या बिल्कुल ही अप्रासंगिक हो सकते हैं। मुझे पक्का यकीन है कि प्रामाणिक कार्य जरूर ध्यान खींचता है। इसमें कुछ वकत लग सकता है लेकिन मोडिया किसी एक विशेष समय में प्रामाणिक कार्य पर जरूर ध्यान देता है। क्या हमें इसकी फिक्र करनी चाहिए? हां भी और नहीं भी। लेखक और कलाकार भी एक ईसान है और प्रशंसा से उसे खुरी ही होती है। यह कुछ बेसा है जैसे एक स्त्री सुंदर समझे जाने और तारीफ किए जाने पर खुश हो। मैं जानता हूं कि मेरे ऐसे कवि-मित्र हैं जो अपनी कृतियों से निर्लाल

ढाई आखर

देश देशांतर की अन्दरेडि छापावत खुलती हुई यहां पर हस्तांतरण कर देता हूं



-केदारनाथ सिंह

न शुक्ल न कुर्ण। न रक्त न पीत न कुब्ज न पीन। न ह्रस्व न दीर्घ। अरूपं तथा व्योतिगकालत्वा तदेको विशिष्ट शिवः केवलमहम्

बनते रहे बिगड़ते रहे कारवार शीक एक हम हैं आरजू का सहाय बने हुए।

-मकदुम

बस अब उनसे यूं कहते चले कि लौट के न आओ कभी दिल में ये भी समझते हैं कि फिर लौट के आना है।

-शेरी भूपाली

परीमां दिला जरा दस दो तमारा देख लूं मैं भी जलाकर आशियां मेरा किसी को क्या मिला होगा।

-साहिर

रजा रचते ही नहीं हैं, दूसरों का रचा बहुत गौर से देखते-परखते हैं- खासकर लिखा हुआ। पढ़ते-पढ़ते अपनी नोटबुक- 'ढाई आखर'- में ये कविताएं और उद्धरण भी उतारते जाते हैं। पेश है उनकी नोटबुक की झलक:

● मैं नीर भरी दुख की बदली परिचय इतना इतिहास यही कल उमड़ी थी मिट आज चली।

-महादेवी वर्मा

● ओझल होती-सी मुझ भर कर सब कह गई तुम्हारी छाया

मुझको ही सोच-भरे यो हीं खड़े-खड़े यो मुझमें उमड़ा वह कहना नहीं आया।

-अज्ञेय

● जो है उससे बेखतर चाहिए दुनिया को बदलने के लिए मेहरार चाहिए

-मुक्तिबोध

● राक़ हुआ दिन री, मैं कोलाहल के पहले

वसुधा वाक् शरण

● उसके होने में हम हुए शामिल हम होने लगे

-गिरधराटी

● शेर मेरे हैं गो ख्वासपसंद गुफागु पर मुझे अवागम है।

-मीर

● पागल नंगा है या पहने इसको लोहा देखकर जानें।

-विनोबा: गीता प्रवचन

● मां, लौटकर जब आऊंगा क्या लाऊंगा यात्रा के बाद की धकान।

-अशोक वाजपेयी

● तुम तुंग हिमालय रंग और मैं चंचल गति सूर सफ़िरा

-निराला

● एक दिन बच्चों की बेखोप हंसी होगी बच्चों की बेखोप हंसी की तख। ऐसी कोई चुप्पी नहीं जो खम न हो। जैसे पथर के नीचे दबी घास जैसे राख में जिंदा आग

-पंकज सिंह

● हूँ मुदत कि गातिव भर गया पर याद आता है वो हर इक बात पर कहना कि यूं होता तो क्या होता।

-गालिब

● कुछ नहीं तो कम से कम खवाबे शहर देखा तो है जिस तरफ देखा न था अब उस तरफ देखा तो है।

-मजाज

● पाया भी उनको, खो भी दिया, चुप भी हो गए एक मुज्जसर-सी रात में सदियों गुजर गई।

● कतअ: कौन न ताल्लुक हमसे कुछ नहीं तो अदावत हो सही।

-गालिब